ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 15 कुल पृष्ठ-4 02 से 08 जुलाई, 2020 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 आ. शु.-02

कोरोनाकाल में वैदिक संस्कृति के प्रमुख स्तम्भों

यज्ञ, योग तथा आयुर्वेद को विश्व पटल पर आच्छादित करने के लिए सोशल तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यमों द्वारा करें भरसक प्रयास

– स्वामी आर्यवेश

कोरोना के इस वैश्विक संकटकाल में विश्व की भांति भारत भी अछूता नहीं रहा। इस संक्रमण के बीच अन्य परिस्थितिजन्य घटनाक्रमों पर विचार करें तो विश्व के अनेक देशों में भारत के चिकित्सीय तथा अन्य मार्ग दर्शन पाने की लालसा दिखाई पड़ी है। आज विकसित और उच्च स्तरीय चिकित्सीय सुविधाओं का दम्भ भरने वाले राष्ट्र भी इस महामारी के सम्मुख नत–मस्तक हैं। सरकारें, सुरक्षा तन्त्र और अनेक वैज्ञानिक अनुसंधान अर्थहीन से प्रतीत हो रहे हैं। ऐसे में भारत के लोग आयुर्वेद की सरल चिकित्सा स्वयं कर रहे हैं और स्वस्थ भी हो रहे हैं। यज्ञ, योग और आयुर्वेद को अपनाकर भारत के जनमानस ने विश्व को एक सन्देश दिया है जो समस्त विश्व के लिए अनुकरणीय है। भारत की कालजयी सनातन, वैदिक संस्कृति, प्रकृति, पर्यावरण के सर्वथा अनुकूल है। इस वैश्विक महामारी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारतीय आध्यात्मिक जीवनशैली यज्ञ, योग और आयुर्वेद ही विश्व को विभिन्न प्रकार के दूषित वायरसों, ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरणजन्य संकटों से उबार सकती है।

विश्व के अनेक देशों के राष्ट्राध्यक्ष जिस तरह से वैदिक संस्कृति तथा रीति, नीति और परम्परानुसार भारतीय अभिवादन 'नमस्ते' करते दिखाई पड़े हैं उससे वैदिक संस्कृति की सार्वभौमिकता भी परिलक्षित हुई है। इस महामारी से पूर्व भी कई बार वैश्विक स्तर पर सुखी, उन्नत और निरोगी जीवन के लिए यज्ञ, योग और आयुर्वेद तथा प्राकृतिक चिकित्सा पर विश्वास व्यक्त किया जा चुका है। यज्ञ, योग और आयुर्वेद अंगीकार करके असाध्य से असाध्य रोगों का भी सहज निदान और उपचार किया जा सकता है।

अब वह समय आ गया है कि भारत सहित सारे विश्व में जन–जन को अपनी वैदिक संस्कृति से परिचित कराया जाये तथा यज्ञ, योग और आयुर्वेद की त्रिवेणी में स्नान कराया जाये। क्योंकि आज सारा विश्व भारतीय संस्कृति के महत्त्व को समझ रहा है और उसकी महत्ता को स्वीकार कर रहा है।

सर्वप्रथम हम यज्ञ पर विचार करते हैं। यज्ञ में मन्त्रोच्चारण से पूर्व ओ३म् शब्द बोलने का विधान है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रारम्भ में लिखा है कि ओ३म् शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है। क्योंकि अ, उ, म् तीन अक्षर मिलकर एक ओ३म् शब्द बनता है। इस नाम से परमेश्वर के बहुत से नाम आ जाते हैं जैसे अकार से विराट अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तेजसादि, मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक है। वेद में ओ३म् एवं ब्रह्म वाक्य आया है अर्थात् परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म् है। वह आकाश की तरह व्यापक है। ओ३म् एक सार्थक शब्द है। जो रक्षा करता है उसे ओ३म् कहते हैं। योग शास्त्र में 'तज्जपः तदर्थः भावनम्' कहा गया है। जिसका अर्थ है प्रणव अर्थात् ओ३म् का जप और उसके सार्थक स्वरूप का चिन्तन करना। ईश्वर स्वरूप की बार–बार आवृत्ति करना ही जप है। जप ईश्वर प्रणिधान का साधन है। जप चंचल मन को एकाग्र करने का भी साधन है और इससे मानसिक शुद्धि भी होती है। इसीलिए मनुस्मृति में जप यज्ञ को विधि यज्ञ से दस गुना श्रेष्ठ कहा गया है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की साधना में जप को प्रथम स्थान दिया है। इस ओ३म् जाप को अब आध्यात्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी देखा जा रहा है। मेडिकल साईंस अब उन बीमारियों का इलाज ढूंढ़ रहा है जिसमें आधुनिक दवाएं हार चुकी हैं। कुछ वर्ष पूर्व एक शोध प्रकाशित हुआ है जिसमें कहा गया है कि ओ३म् एक ऐसा शब्द है जिसका अलग–अलग आवृत्तियों से जाप करने पर रक्तचाप, दिल–दिमाग, पेट और रक्त से जुड़ी हुई कई बीमारियों के इलाज में चमत्कारिक असर दिखा है। ओ३म् का जप मस्तिष्क से लेकर नाक, गला तथा फेफड़े तक के हिस्से से बड़ी तेज तरंगों का वैज्ञानिक रूप से संचार करता है। ओ३म् का सर्वप्रथम जिक्र वेदों में मिलता है। वस्तुतः तीन अक्षरों वाले ओ३म् के साथ तीन महाव्याहुतियों भूः, भूवः, स्वः का जप भी यदि प्राणायाम के साथ किया जाता है तो निश्चित ही प्राणापानादि शारीरिक वायु के संचरण से स्वास्थ्य में सुधार होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संन्ध्या के मन्त्रों में इसीलिए प्राणायाम के मन्त्रों में महाव्याहुतियों का उल्लेख किया है। ये कितनी वैज्ञानिक सोच है। अतः यह ओ३म् का जप आध्यात्मिकता के साथ–साथ शारीरिक दुःखों का भी निवारण करता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सारे विश्व को ओ३म् की महिमा से अवगत कराने के लिए कटिबद्ध हों।

वैदिक संस्कृति को यदि एक शब्द में सीमित किया जाये तो वह शब्द है यज्ञ। पौर्णमास से लेकर अश्वमेघ पर्यन्त यज्ञों का आधान इसका सूत्र है। फिर इन यज्ञों की विस्तारिता को भी यदि संक्षिप्त किया जाये तो वह पंचमहायज्ञों में सिमट जायेगा। समय और द्रव्य की दृष्टि से विशाल अश्वमेधादि यज्ञों को महायज्ञ नहीं कहा गया। मात्र यज्ञ कहा गया। उसके विपरीत ब्रह्मयज्ञादि पांचों यज्ञों को महायज्ञ कहकर गौरवान्वित किया गया। कारण स्पष्ट है कि यह पांचों यज्ञ जीवन पर्यन्त चलने वाले यज्ञ हैं। कोई भी गृहस्थ इन पांच महायज्ञों को करने में प्रमाद न करे। प्रत्येक गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि वह प्रतिदिन पंचमहायज्ञों को अवश्य करे। यह पांच महायज्ञ हैं – ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ और अतिथि यज्ञ। पंचमहायज्ञों को करने से व्यक्ति का जीवन, परिवार, समाज शुद्ध, स्वस्थ, सम्पन्न, सुयोग्य, सदाचारी, सम्मानित, सुखी और स्वाध्यायशील रहता है। यज्ञ पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि कराने वाला है।

शतपथ ब्राह्मण में कहा गया कि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' अर्थात् यज्ञ से बढ़कर संसार में और कोई श्रेष्ठ कर्म नहीं है। अथर्ववेद में आया कि 'यज्ञ इन्द्रम्वर्द्धयत्' अर्थात् यज्ञ करने से सब प्रकार के ऐश्वर्य और सुख की वृद्धि होती है। 'यज्ञो तपः' यज्ञ करना सर्वोत्तम तप है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने यजुर्वेद के मन्त्र के आधार पर बताया कि यज्ञ करने से जो मुख्य लाभ प्राप्त होते हैं वे निम्न प्रकार से हैं :–

1. प्रचुर अन्न तथा ऊर्जा का उत्पादन। 2. ज्ञान, विज्ञान तथा धनादि से प्राणी मात्र की सेवा की भावना। 3. प्रजा तथा पशुओं का संरक्षण। 4. प्रबल रोगों और विघ्नों का उन्मूलन। 5. सबके लिए निश्चित सुख तथा परमानन्द की प्राप्ति। 6. कुटिलता का त्याग तथा श्रेष्ठ गुणों का उत्पन्न होना। पंच महायज्ञों में मात्र दो यज्ञों में ही अग्नि का आधान तथा स्वाहाकार है। ये दो यज्ञ हैं – देव यज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ। शेष तीन यज्ञों में केवल समर्पण और सेवा की भावना है। लेकिन फिर भी वे यज्ञ कहाते हैं। स्पष्ट है कि यज्ञ तो वास्तव में वे सब श्रेष्ठतम् कर्म है जो परहित में लोककल्याण के लिए इदं न मम् की भावना के साथ अर्थात् निःस्वार्थ भाव से पूर्ण समर्पित होकर किये जाते हैं। प्राणी मात्र का उपकार ही यज्ञ की मूल भावना है। वास्तविक यज्ञ तो तभी होता है जब परमार्थ के कार्य के लिए समूचे जीवन की आहुति प्रदान की जाती है।

आज कोरोना संक्रमणकाल में पूरे विश्व में यज्ञ की इन्हीं उदात्त भावनाओं का प्रचार–प्रसार इलेक्ट्रानिक तथा अन्य माध्यमों से पूरी ताकत लगाकर किया जाना चाहिए जिससे पूरा विश्व भारतीय संस्कृति के प्रमुख स्तम्भ इस वैदिक यज्ञ को समझे और जीवन को उच्चता, श्रेष्ठता, उदात्तता की ओर अग्रसर करे, तभी विश्व समाज में भाईचारा, समरसता, सौमनस्यता और एक–दूसरे के सहयोग की भावना बलवती होगी। अगले अंक में वैदिक योग के विषय में विचार किया जायेगा।

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

ममत्व, मातृत्व और सतर्कता

– डॉ. जसवन्त राय सहगल

आज हमारे बच्चे हमसे अधिक समझदार, बुद्धिमान एवं चतुर हैं। किन्तु खेद से लिखना पड़ता है कि उन्हें नैतिकता या नैतिक मूल्यों का कोई ज्ञान नहीं। यही कारण है, उनके पथभ्रष्ट होने का। परिणामतः उनके मन में प्रसन्नता का अभाव रहता है। सदा भय, चिन्ता, लोभ, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, हिंसा आदि के भाव बने रहते हैं और वे अवसाद से ग्रस्त हो जाते हैं। कई बार, अपने को संसार में अकेला और हताश समझने लगते हैं। उनका किसी कार्य में मन नहीं लगता और किसी छोटी-मोटी असफलता होने पर अथवा आपसी कहा-सुनी होने पर आत्महत्या की ओर प्रेरित हो जाते हैं अथवा दूसरे की हत्या कर देते हैं और माता-पिता को पता भी नहीं चलता।

ममत्व शब्द संस्कृत की मम् धातु से बना है, जिसका अर्थ है मेरा या मेरे से सम्बन्धित। प्रत्येक गृहिणी का एक सपना होता है कि वह मां बने और उसे मां कहने वाला कोई उसका अपना हो, जिसको उसने नौ मास तक अपनी कोख में रखकर, अपने रस रक्त से पुष्ट कर, उचित समय पर भूमिष्ठ किया हो, अर्थात् जन्म दिया हो। उस बच्चे के जन्म के साथ ही ममत्व व मातृत्व का जन्म होता है और पुलकित व प्रफुल्लित होता है। तब वह स्त्री अपना पूरा प्यार, उस बच्चे पर उडेल देती है। उसकी देखभाल, लालन-पालन, खानपान, सम्भाल आदि में अपना सारा समय लगा देती है। बच्चे की एक आवाज या चीख उसे विचलित कर देती है। वह उसे दुःख में नहीं देख सकती। यदि वह बच्चे से दूर भी हो, तो उसका ध्यान सदा बच्चे में ही रहता है। वह बच्चे की कुशलता व स्वास्थ्य के प्रति सदा सतर्क रहती है और उसके लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहती है। उसके भविष्य के बारे में सोचकर चिन्तित हो उठती है और कामना करती है उसके स्वास्थ्य व उज्ज्वल भविष्य की। यही है प्यार, मोह, ममत्व, अपनत्व, जो बच्चे के विकास के लिए परमावश्यक है। यह तभी संभव है जब स्त्री गृहलक्ष्मी या गृहिणी हो। उसका अपना व्यक्तिगत कोई कैरियर न हो। ऐसी अवस्था में बच्चे को माँ के साथ अपने पिता का प्यार भी भरपूर मिलता है और बच्चा दोनों की छत्रछाया में विकसित होता है। ऐसे बच्चे भाग्यशाली होते हैं जिनको माता-पिता दोनों का प्यार मिलता है।

दूसरी ओर, जहां पति-पत्नी दोनों कामकाजी हों और वे दोनों अपने कैरियर के प्रति सजग हों और उसमें उन्नति कर आकाश को छूना चाहते हों, वहां भी स्त्री को माँ बनने की चाह रहती है और समय पर माँ बनती है किन्तु अपने कैरियर के कारण, बच्चे के लिए समय नहीं निकाल पाती। यद्यपि वह भी उसे प्यार करती है। ऐसी अवस्था में बच्चे के पालन-पोषण, देखभाल के लिए किसी अन्य स्त्री या किराए की धाय की आवश्यकता होती है। क्या वह स्त्री या धाय बच्चे की देखभाल, पालन-पोषण, खान-पान तथा स्वच्छता का ध्यान रख पाती है?क्या वह बच्चे के स्वास्थ्य व कुशलता के प्रति सजग है?क्या वह पूरा समय बच्चे को दे पाती है?क्या वह पूरा ध्यान बच्चे पर केन्द्रित रखती है। ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जिनका उत्तर सकारात्मक नहीं, परिणाम गम्भीर हो सकते हैं। बच्चे का कम तथा अधूरा भोजन (Malnutrition) के कारण, उसका दुर्बल व रोगी शरीर तथा अधूरा विकास। जहां स्त्रियां सरकारी नौकरी में हैं वहां उन्हें कई प्रकार की सुविधायें यथा मैटर्निटी लीव बच्चे के पालन-पोषण के लिए अवकाश (5 वर्ष तक), कार्यालय में क्रेच आदि प्राप्त हैं और वे अपनी ड्यूटी करते हुए भी बच्चे के प्रति अपना कर्त्तव्य निभा सकती हैं। किन्तु जहां स्त्रियां अपने कैरियर के प्रति अधिक सजग हैं और उन्हें आवश्यकता से अधिक समय अपनी कार्यशाला में बिताना पड़ता है वहां बच्चे के लिए उनके पास कोई समय नहीं रहता।

उचित समय पर, दो-अढ़ाई वर्ष की आयु में बच्चे को किसी अच्छे प्लेस्कूल में प्रविष्ट करा दिया जाता है। यद्यपि वहां बच्चों की उपस्थिति में उसे कुछ अच्छा लगता है। किन्तु वहां भी वह अपनी मां को भुला नहीं पाता। वहां तीन-चार घण्टे बिताने के बाद जब वह घर आता है तो उसे मां के स्थान पर वही धाय मिलती है, तो वह दुखी होता है और अवसाद में चला जाता है। कई बार, विद्रोही हो खाना-पीना छोड़ देता है और धाय के कोप का भाजन बनता है। समय बीतता जाता है। पांच वर्ष की आयु में उसे किसी अच्छे स्कूल में प्रविष्ट कर, उत्तम शिक्षा की व्यवस्था कर दी जाती है। बच्चे की बढ़त के साथ उसकी रुचियाँ बदलने लगती हैं। उसे अब धाय की आवश्यकता नहीं। आरम्भ में उसे किसी डे हॉस्टल में दिन बिताने की व्यवस्था कर दी जाती है और समय बीतने के साथ, वह अपना समय घर पर बिताना चाहता है। उसकी इच्छानुसार ऐसी व्यवस्था कर दी जाती है।

ऐसा क्यों होता है, क्योंकि उन्हें नैतिक शिक्षा नहीं दी गई। नैतिक मूल्यों का ज्ञान नहीं। धर्म के प्रति रुचि नहीं। आपस में भ्रातृभाव नहीं। पारिवारिक सम्बन्धों को जाना नहीं। अपनी सभ्यता संस्कृति से प्रेम नहीं। भगवान में श्रद्धा-विश्वास नहीं। कानून का डर नहीं।

समयान्तर से बच्चा बाल्यावस्था से किशोरावस्था में पदार्पण करता है। उस समय उसकी सोच व मानसिकता बदलने लगती है। उस समय बच्चे पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। यह

समय तेरह से उन्नीस वर्ष की अवस्था के बीच का होता है, जिसे अंग्रेजी में Teens कहते हैं। यह समय जीवन का ऐसा दोराहा होता है जहां बच्चे का दिशानिर्देश होना आवश्यक होता है। अन्यथा उसके पथ-भ्रष्ट होने का भय रहता है।

मीडिया (प्रिन्ट इलैक्ट्रोनिक जिसमें आडियो-विडियो सब सम्मिलित है) में दृश्यों का बच्चे के मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है और कुसंगति के कारण वे भटक जाते हैं। उसके माता-पिता अपनी व्यस्तता के कारण, उस पर कोई ध्यान नहीं दे पाते और उसे संतुष्ट व शान्त रखने के लिए अपने धन का सहारा लेते हैं और उसे आवश्यकता से अधिक धन देते हैं, जिसे वह अपनी इच्छानुसार अपनी रुचियों पर खर्च कर सके और यह जानने का कभी प्रयत्न नहीं करते कि वह किस प्रकार की वस्तुओं पर खर्च करता है?दिन में क्या करता है?कौन-सी क्रीड़ाओं में भाग लेते हैं?उसकी संगति कैसे बच्चों के साथ है?क्या वह अपनी पढ़ाई में चुस्त-दुरुस्त है?क्या उसका रिपोर्टकार्ड संतोषजनक है?क्या उसका व्यवहार परिवार में सामान्य है, घर में अपने क्रोध का प्रदर्शन तो नहीं करता?क्या वह उचित समय पर सोता और जागता है?क्या वह अधिक समय टी. वी. व कम्प्यूटर (विडियो गेम तथा फेसबुक) पर तो खर्च नहीं करता?क्या वह किसी व्यसन में तो नहीं पड़ गया?क्या वह अपनी इच्छाओं को मूर्तरूप देने के लिए समाज विरोधी गतिविधियों में भाग तो नहीं ले रहा?क्या वह उचित समय पर अपना भोजन करता है?क्या वह खाद्याखाद्य का ध्यान रखता है?क्या वह अपना अकेलापन दूर करने के लिए गुटखा, मद्य या ड्रग्स का सहारा तो नहीं ले रहा?

ऐसे बच्चे अपने माता-पिता के लिए समस्या बन जाते हैं। वे उद्दण्ड, दुस्साहसी एवं सुस्त हो जाते हैं। उनकी स्मरणशक्ति मंद पड़ जाती है और वे ''कुछ भी'' करने के लिए तैय्यार रहते हैं, किन्तु एक विशेष मूल्य पर। उनके मन में किसी के प्रति दया नहीं होती और न ही सम्मान की भावना। भले ही वे उनके माता-पिता ही क्यों न हों। वे अपने को राजकुमार, सर्वशक्तिमान् एवं समाज से ऊपर समझने लगते हैं और चाहते हैं कि सब उनका सम्मान करें। उनका रहन-सहन एवं खर्च एक विशेष सीमा से अधिक होता है। माता-पिता द्वारा दिया गया धन, उनकी छोटी-मोटी आवश्यकताओं में पूरा हो जाता है, किन्तु दुर्व्यसनों में पड़ने के कारण अन्य खर्च पूरे नहीं होते और प्यार न मिलने के कारण, अपने बढ़ते हुए खर्च को पूरा करने के लिए, वे समाजविरोधी गतिविधियों यथा लूट-खसूट, चोरी, डाका, अपहरण कर फिरौती प्राप्त करना, सुपारी, हत्या आदि में लिप्त हो जाते हैं। कभी किसी लड़की का बलात्कार भी कर देते हैं। जब ये तथ्य माता-पिता के सामने आते हैं, तो बहुत देर हो चुकी होती है। उस अवस्था से पूर्वावस्था में आना लगभग असम्भव होता है। यदि बच्चे को ड्रग्स लेने की आदत हो गई है तो स्थिति और भी भयावह होती है। परिणाम शुभ नहीं होता। बहुधा उसकी मृत्यु हो जाती है अथवा वह आत्महत्या कर लेता है और यदि उसे De-Addiction की सुविधा आरम्भ में ही प्राप्त हो जाये, तो थोड़े सुधार की आशा की जा सकती है।

इसका श्रेय जाता है हमारी जीवनशैली, स्कूली-शिक्षा व्यवस्था तथा मीडिया (प्रिन्ट व इलैक्ट्रोनिक, जिसमें आडियो व विडियो भी सम्मिलित है) को। मीडिया (टी. वी., इण्टरनेट, फेसबुक, सिनेमा आदि) में सब कुछ अच्छा, बुरा दिखलाया जाता है और उसका प्रभाव बच्चे के मन-मस्तिष्क में अंकित हो जाता है और वे अपनी अपरिपक्व बुद्धि के कारण उन दृश्यों को मनोरंजन एवं सत्य समझते हैं और उनके विचार मलिन हो जाते हैं और वे कई दुर्व्यसनों से ग्रस्त हो जाते हैं। कई बार, उन दृश्यों को देखकर, वैसे ही स्टंट करने का प्रयास कर हानि उठाते हैं और कभी-कभी उन प्रक्रियाओं से मृत्यु भी हो जाती है। स्मरण रहे कि मीडिया में दिखाये गये दृश्यों का हमारे वास्तविक जीवन से कुछ लेना-देना नहीं होता। वे मात्र मनोरंजन के नाम पर दिखाये जाते हैं।

आज हमारे बच्चे हमसे अधिक समझदार, बुद्धिमान एवं चतुर हैं। किन्तु खेद से लिखना पड़ता है कि उन्हें नैतिकता या नैतिक मूल्यों का कोई ज्ञान नहीं। यही कारण है, उनके पथभ्रष्ट होने का। परिणामतः उनके मन में प्रसन्नता का अभव रहता है। सदा भय, चिन्ता, लोभ, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, हिंसा आदि के भाव बने रहते हैं और वे अवसाद से ग्रस्त हो जाते हैं। कई बार, अपने को संसार में अकेला और हताश समझने लगते हैं। उनका किसी कार्य में मन नहीं लगता और किसी छोटी-मोटी असफलता होने पर अथवा आपसी कहा-सुनी होने पर आत्महत्या की ओर प्रेरित हो जाते हैं अथवा दूसरे की हत्या कर देते हैं और माता-पिता को पता भी नहीं चलता।

ऐसा क्यों होता है, क्योंकि उन्हें नैतिक शिक्षा नहीं दी गई। नैतिक मूल्यों का ज्ञान नहीं। धर्म के प्रति रुचि नहीं। आपस में भ्रातृभाव नहीं। पारिवारिक सम्बन्धों को जाना नहीं। अपनी सभ्यता संस्कृति से प्रेम नहीं। भगवान में श्रद्धा-विश्वास नहीं। कानून का डर नहीं।

सारांश कि हमें केवल बच्चों को जन्म ही नहीं देना होता, अपितु उन्हें शक्तिशाली, सुसंस्कृत, सुशिक्षित एवं सभ्य नागरिक बनाना होता है। जो परिवार व समाज के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकें और देश के उत्थान में योगदान दे सकें। इसके लिए माता-पिता दोनों को अथवा एक को बच्चों पर पूरा ध्यान देना होगा, तभी कुछ सुधार की आशा हो सकती है।

– सेवा सदन, सी-5ए-254, जनकपुरी, नई दिल्ली

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्

– अशोक आर्य

यह मानव शरीर (मानव) परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसे अशरफडल मखलूकात (प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ) कहा गया है। नीतिकार के अनुसार आहार, निद्रा, भय तथा संतानोत्पादन आदि की क्रियाएं तो मनुष्यों एवं पशुओं में समान ही होती हैं, किन्तु मनुष्य अपने कार्यों को धर्माधर्म के विवेकपूर्वक करता है। वस्तुतः मानवेतर समस्त योनियां भोग योनियां हैं। केवल मनुष्य ही कर्म करने में स्वतंत्र है। वह चाहे तो शुभ कर्म कर सकता है चाहे तो अशुभ। शुभ तथा अशुभ, उचित तथा अनुचित का विभेद करने हेतु परमात्मा ने अत्यन्त कृपापूर्वक उसे विवेक प्रदान किया है तथा विवेक का प्रयोग कर सत्य और असत्य, शुभ और अशुभ को जानने के लिए मानव सृष्टि के आदि में ही समस्त ज्ञान भण्डार वेद भी प्रदान किया। अब यह मानव के ऊपर निर्भर है कि वेदानुकूल मार्ग पर चलकर, धर्म अर्थ काम मोक्ष के पुरुषार्थ चतुष्टय को जीवन में धारण कर जीवात्मा के अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर लें। इसीलिए महाभारत के महर्षि वेदव्यास जी ने कहा - "न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं किंचित् "अर्थात् सृष्टि के प्राणियों में मनुष्य से बढ़कर और कोई नहीं है।"

मनुष्य द्वारा आज ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में जो कल्पनातीत उन्नति की गई है उसे देखकर यह सत्य भी प्रतीत होता है। साहित्य, संस्कृति, कला, उद्योग, कल-कारखानों, पुलों, आवागमन एवं संचार के साधनों, कृषि, भवनों, सुखदायी संसाधनों आदि के क्षेत्र में उसने आश्चर्यजनक उपलब्धि की है। पर क्या वह सुखी है? आज प्रायः मनुष्य दुखी है, आशांकित हैं। सर्वत्र आपाधापी मची है। हर कोई दूसरे का गला काटने को तत्पर है। नैतिकता सर्वत्र तिरोहित है। यह इसलिए कि उपरोक्त सारे निर्माण जिसके लिए हैं उस मनुष्य के निर्माण की तरफ किसी का कोई ध्यान नहीं है।

वेद मां ने हमें यह निर्देश दिया "मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्" - मनुष्य बनो और दिव्य संतानों को उत्पन्न करो। स्पष्ट है कि मात्र मानव योनि प्राप्त करने से ही कोई मनुष्य नहीं बन जाता। उसके लिए विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। मनुष्यता के पर्याय दिव्य गुणों को धारण करना पड़ेगा। मनुष्य का मानस इस तरह का निर्मित करना होगा, उसके आस पास का वातावरण इस प्रकार का निर्मित करना होगा कि वह बुराईयों से दूर हट, भद्र को ग्रहण करने में तत्पर रहे।

गर्भावस्था व गर्भकाल का मानव निर्माण के संदर्भ में महत्व -

मानव निर्माण की इस सम्पूर्ण योजना की पहली सीढ़ी सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने प्रस्तुत की हैं बालक का जब जन्म होता है जब वह दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लेकर आता है। एक प्रकार के संस्कार तो वह हैं जो वह जन्म-जन्मान्तरों के अपने साथ लाता है। दूसरे प्रकार के, जिन्हें वह अपने माता पिता से वंश परम्परा में प्राप्त करता है। ये संस्कार अच्छे बुरे दोनों प्रकार के होते हैं। मानव निर्माण योजना में इन पूर्व से प्राप्त बुरे संस्कारों को विनष्ट करना तथा नवीन बुरे संस्कारों को ग्रहण करने से रोकना शामिल है। ऋषियों ने इसका उपाय संस्कार बताया है। महर्षि जी ने स्व लिखित संस्कार विधि में 16 संस्कारों का विशद वर्णन किया है। माता-पिता से बुरे संस्कार बालक में न आवें इस हेतु माता-पिता को स्वयं सारी बुराइयों से बचते हुए अपने जीवन का एक सच्चे मानव के रूप में निर्माण करने के साथ-साथ गर्भाधान, गर्भकाल के समय उन समस्त नियमों का पालन करना होगा जिससे कि गर्भ में विकसित बालक में बुरे संस्कारों का प्रवेश न्यूनतम हो। क्योंकि बालक पिता के अंग से, हृदय से उत्पन्न होता है। उसका प्रतिरूप होता है।

अङ्गादङ्गात्सम्भवसि हृदयादधि जायसे (शतपथ 14/9/4/8)।

एतरेय के ऋषि ने कहा "स अग्र एवं कुमारं जन्मनः अग्रे अधि भावयति" (ऐतरेयोपनिषद् 2/3) पिता अपनी संतान के उत्पन्न होने के पूर्व उसका जैसा निर्माण करना चाहता है, नक्शा बन जाता है। जन्म लेने से पूर्व ही पिता के जैसे विचार, जैसा चिन्तन और जैसा संकल्प होता है उसी प्रकार का जीवात्मा उसके वीर्य में प्रवेश कर जाता है।

इसी प्रकार संतान का हृदय माता के बीज से उत्पन्न होता है। और रस लाने ले जाने वाली धमनियों से माता के हृदय से जुड़ा रहता है। इसीलिए सुश्रुत संहिता में लिखा है -"गर्भवती स्त्री को जिस बात में अनिच्छा होती है उसकी संतान की भी उस बात में अनिच्छा होती है। जिस बात में गर्भवती स्त्री की इच्छा रहा करती है उस बात में संतान की भी इच्छा बन जाती है।" इसीलिए जैसे सुनार अशुद्ध सोने को अग्नि में डालकर उसका संस्कार करता है, उसी प्रकार बालक जब माँ के गर्भ में होता है, उसी समय से संस्कारों के माध्यम से उसके दुर्गुणों को निकाल कर सद्गुणों का आधान करने का प्रयत्न करना चाहिए।

यहाँ मनुस्मृति का यह श्लोक दृष्टव्य है-

यादृशं भजते नारी सुतं सूते तथाविधम्। तस्मात् प्रजाविशुद्ध ध्यर्थ स्त्रियं रक्षेत् प्रयत्नतः। 19 19।।

अर्थात् "गर्भवती स्त्री जिस प्रकार की तस्वीर मन में खींच लेती है उसी प्रकार की संतान को जन्म देती है। इसीलिए उत्तम सन्तान के लिए स्त्री को ऐसे वातावरण में रखना चाहिए जिससे सन्तान उत्तम एवं शुद्ध विचारों वाली बने।

जब बच्चा माँ के गर्भ में होता है तब माँ की मनोवृत्ति का सन्तान के निर्माण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसमें प्राचीनकाल के इतिहास के प्रमाण मिलते हैं, जैसे -

1. महाभारत में पढ़ने को मिलता है कि अभिमन्यु, माता सुभद्रा के गर्भ में चक्रव्यूह तोड़ने के संस्कारों को लेकर पैदा हुआ।

2. माता मदालसा देवी के बारे में कहा जाता है कि वह अपनी गर्भावस्था में लोरी गाया करती थीं -

"शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि संसारमाया परिवर्जितोऽसि" हे मेरे बेटे! तू शुद्ध है, बुद्ध है, निर्दोष है, संसार की माया से रहित है। इन संस्कारों के कारण उसकी तीन सन्तानें - विक्रान्त, सुबाहु और अरिदमन ब्रह्मर्षि बन गई। तीनों पुत्र राज पाट का मोह त्यागकर वनों को चले गये। यह स्थिति देख महाराज (उसके पति) ने कहा इस प्रकार वंश कैसे चलेगा? क्या सबको योगी बना दोगी। तब चौथे पुत्र के उत्पन्न होने के समय मदालसा ने अपनी मानसिक स्थिति बदल दी, फलतः चौथा पुत्र सर्वगुण सम्पन्न क्षत्रिय हुआ। माता मदालसा ने उसका नाम "अलर्क" रखा। माता ने उसे राजनीति का उपदेश दिया। उसे लोरी देते हुए कहती थीं -

धन्योऽसि रे यो वसुधाम शत्रुरेकश्चिरं पालयिताऽसि पुत्र।

तत्पालनादस्तु सुखोय भोगो धर्मात् फलं प्राप्स्यसि चासरत्वम्।।

अर्थात्, हे पुत्र! तू धन्य है जो अकेला ही शत्रुओं से रहित होकर इस पृथिवी का पालन कर रहा है। धर्मपूर्वक प्रजापालन से तुझे इस लोक में सुख और मरने पर मोक्ष की प्राप्ति होगी।

3. पाश्चात्य देशों में भी इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिलते हैं। कहते हैं कि अमेरिका के प्रेसीडेण्ट गारफील्ड का हत्यारा गीटू जब माता के गर्भ में था, तब माता ने गर्भपात कर उसकी हत्या कर डालने का प्रयत्न किया था। वह गर्भपात तो नहीं कर सकी, परन्तु माता के गर्भ में स्थित उस सन्तान पर जो संस्कार पड़ चुके थे, उन्होंने गीटू को हत्यारा बना दिया।

4. नेपोलियन के विषय में कहा जाता है कि जब वह माता के पेट में था तब उसकी माता सेनाओं की परेड देखने में लगी रहती थी। जब वह सैनिकों को परेड करते और सैनिकों को सैनिक गीत गाते सुनती थी, तब उसका रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठता था। गर्भावस्था में पड़े इन संस्कारों ने नेपोलियन को एक महान योद्धा बना दिया।

मनोविश्लेषणवाद के प्रवर्तक फ्रॉयड ने कहा कि बचपन में, जब बच्चे को मां, गोद में लोरियां दे रही होती है, तब उस पर जो संस्कार पड़ जाते हैं वे मिटाये नहीं मिटते, वे आजन्म साथ रहते हैं। वैदिक ऋषियों का तो यहां तक कहना था कि माँ अपनी गोद में ही नहीं, अपने गर्भ में जो उस पर जो संस्कार डाल रही होती है, वे गोद में दिये संस्कारों से भी प्रबल होते हैं। गोद में बैठा बालक तो माँ से अलग शरीर में आ जाता है, गर्भ में पल रहा बालक तो माँ का ही शरीर होता है, माँ के शरीर तथा मन का अभिन्न अंग होता है, इसलिए बालक पर अपने संस्कारों की अमिट निशानी डालने के लिए उस समय माँ को सचेत तथा सचेष्ट होना उचित है।

इसी कारण वैदिक मनीषियों ने निर्देश दिए हैं कि मानव निर्माण करना है तो न सिर्फ गर्भाधान तथा गर्भकाल में विशिष्ट कर्तव्यों को ध्यान में रखना ही होगा वरन् उससे पूर्व गृहस्थ में प्रवेश करने वाले, सन्तानोत्पत्ति के कर्तव्यों का निर्वहन करने वाले पति पत्नी को स्वयं के जीवन में भी मनुष्योचित उदात्त आदर्शों को स्थान देना होगा, ताकि कम से कम उनके माध्यम से बच्चे में बुरे संस्कार न जावें। साथ ही जन्म के पश्चात् बालक के चारो तरफ, गुरुकुल में आचार्यों का सानिध्य प्राप्त करने से पूर्व, इस तरह की शिक्षा का वातावरण सृष्ट करने का दायित्व भी माता-पिता का है ताकि बालक के पूर्व जन्मों के संचित बुरे संस्कार दग्ध हो सकें तथा अच्छे संस्कार प्रभावशाली हो सकें। यह सारी बातें मानव जीवन निर्माण की प्रथम सीढ़ी (सोपान) निश्चित रूप से समझी जा सकती हैं जिनका निर्देश महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय समुल्लास में किया है।

- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

स्वास्थ्य चर्चा

अलसी के छोटे–छोटे दानों में छिपे हैं – बड़े–बड़े गुण

– वैद्य हरिकृष्ण पांडेय 'हरीश'

कुछ लोगों के लिए अलसी का नाम नया हो सकता है लेकिन कई क्षेत्रों में इसका प्रयोग भरपूर होता है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि जिस समाज में अलसी का सेवन किया जाता है वह समाज सदा स्वस्थ रहता है। अलसी को फ्लेक्सी सीड भी कहा जाता है। आयुर्वेद में अलसी के सेवन के भी नियम हैं। जैसे अलसी के दाने को चुनकर सबसे पहले इसको साफ कर ज्यादा से ज्यादा सौ ग्राम कड़ाही में डाल कर जरा सा घी का छींटा लगाकर भूनें। भूनते समय ढक कर भूनें। चटक कर उछलती है, इसलिए सावधानी बरतें। चट–चट करने लगे तब गैस बंद कर ठंडा होने दें। ठंडा होने पर अलसी के दाने को मिक्सी में डालकर दरदरा पीसें। ढक्कन बंद डिब्बे में सुरक्षित रखें। एक–एक चम्मच पानी या दूध के साथ लें। ध्यान रखें इसे सिर्फ एक हफ्ते के अन्दर ही प्रयोग करें, बाद में खराब हो जाता है। ऐसे में अगर हम अलसी का सेवन करें तो निश्चित रूप से कई बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है तथा शरीर को चुस्त एवं फिट रखा जा सकता है। किस बीमारी में अलसी का प्रयोग करें वो इस प्रकार है :–

[kkalh&tqdke & अलसी की चाय पियें, बनाने का तरीका जरा अलग है। दो कप पानी उबालें, एक चम्मच अलसी पाउडर डालें, धीमी आंच पर पकायें। आधा यानी एक कप पानी बच जाये तो छान लें, गुड़ या शहद मिलाकर दिन में दो से तीन बार पियें।

nek & एक चम्मच अलसी के चूर्ण को आधे गिलास पानी में बारह घंटे तक भिगोकर रखें। सवेरे का भीगा शाम को और शाम का भीगा सवेरे छान कर पिलायें। ध्यान रहे गिलास या तो

चांदी की या शीशे की हो।

Mk;fcVht & ताजा पिसी अलसी, आंटा गूंथते समय 25 ग्राम मिलाकर रोटी खायें।

ân; dk fy, mi;kxh & खराब कोलस्ट्रोल की मात्रा कम करती है। दिल की धमनियों में खून के थक्के नहीं जमने देती। एक–एक चम्मच सुबह–शाम पानी या दूध के साथ लें।

ikpur= dk lgk;rk & अलसी में ऐसे फाईबर होते हैं जो कब्ज, बवासीर, भगंदर, प्रवाहिका आदि में बहुत लाभकारी है। कब्ज के लिए तो अलसी अति उत्तम है। पित्त की थैली में पथरी हो तो अलसी का सेवन चमत्कारिक लाभ देता है।

gStk & हैजा में इसका चूर्ण 5 ग्राम, 50 ग्राम पानी में डालकर ठंडा कर दिन में तीन बार पिलाना हितकारी है।

vfunk & नींद न आना, कम आना, मानसिक तनाव आदि के लिए अलसी तथा एरंडी का तेल मिलाकर सिर पर मालिस करने, पांव के तलवे पर मलने से आराम मिलता है।

oh;Z fodkj & इसका चूर्ण, समान भागखंड, आधी मात्रा देशी घी मिलाकर सुबह–शाम एक चम्मच लेना चाहिए।

iSV dh xehZ & अलसी का सेवन पेट की गर्मी दूर करने तथा दस्त साफ कर वीर्य को गाढ़ा बना संतानोपत्ति योग्य बनाती है।

dEiokr ¼ikjfdUlu½ & इस बीमारी में हाथ–पैर पर सिर का नियंत्रण नहीं होता। हमेशा हिलते रहते हैं, चलने में परेशानी होती है। एक चम्मच अलसी चूर्ण शहद के साथ दिन में दो बार देना हितकर है।

dej rFkk tksMksa dk nnZ & अलसी में सोंठ का चूर्ण और नमक मिलाकर लगाने से लाभ होता है। बनाने की विधि अलसी तेल 250 ग्राम, 15 ग्राम सोंठ चूर्ण, 15 ग्राम नमक डालकर धीमी आग पर पकाएं, जब तेल में धुआं उठने लगे तब उतार कर छान कर ठंडा कर दर्द वाले स्थान पर लगायें।

tyus ij & अलसी तेल, चूने का पानी मिलाकर खूब घोंटें। यह सफेद मलहम बन जायेगा, जले स्थान पर दिन में दो बार लगायें। इसके अलावा अलसी के सेवन से यौवन समस्या, शारीरिक दुर्बलता, गर्भपात, स्तनपान के दौरान दूध न आना, कम आने में एक–एक चम्मच सुबह–शाम पानी या दूध से लेना हितकर है। साथ ही रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा थायरॉयड की कार्यकुशलता नियंत्रित करने एवं नियमित करने में सहायक है।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान महात्मा चैतन्य मुनि जी का हुआ देहावसान

आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, संन्यासी महात्मा चैतन्यमुनि जी (हिमाचल प्रदेश) का 28 जून, 2020 को अचानक निधन हो गया है। महात्मा चैतन्यमुनि जी के द्वारा कई पुस्तकों का लेखन कार्य किया गया, उन्होंने ऊधमपुर, जम्मू कश्मीर और सुन्दरनगर (मंडी) हिमाचल प्रदेश आदि स्थानों पर वैदिक आश्रमों की स्थापना करके उनका कुशल संचालन एवं प्रबन्धन महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुरूप किया। वह देश के विभिन्न आर्य समाजों एवं डी.ए.वी. विद्यालयों में व्याख्यान देने के लिए जाते रहते थे, उनके विद्वतापूर्ण व्याख्यान की शैली इतनी आकर्षक होती थी कि श्रोतागण उनके व्याख्यान सुनकर मन्त्रमुग्ध हो जाते थे। उनके द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखे गये लेख आर्य समाज की विभिन्न पत्रिकाओं में निरन्तर

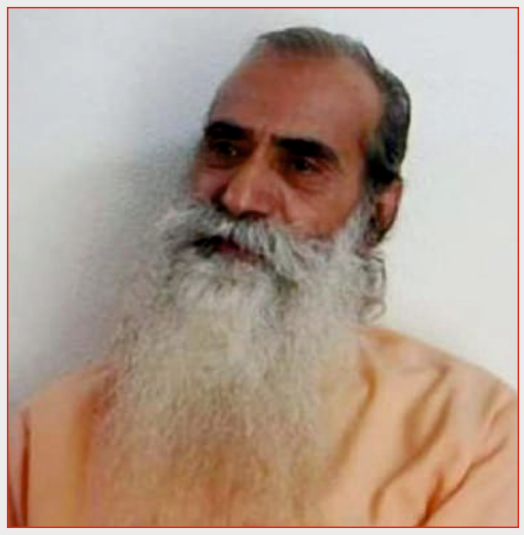

प्रकाशित होते रहते थे। लोग उनको अत्यन्त पसन्द करते थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उनके निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे विद्वान, समाजसेवी, राष्ट्रभक्त महत्मा का अचानक हम सबके बीच से चला जाना आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। वे आजीवन आर्य समाज की उन्नति में लगे रहे।

सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से मैं महात्मा चैतन्यमुनि जी के निधन पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री मामचन्द आर्य पथिक इकबालपुर का निधन

बड़े दुख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री मामचन्द आर्य पथिक इकबालपुर का 1 जुलाई 2020 को रात्रि 9–30 बजे शाकुंभरी सोसाइटी दिल्ली रोड रुड़की में छोटे पुत्र अरविंद कुमार जी के निवास स्थान पर देहांत हो गया है। श्री मामचन्द आर्य के मधुर ओजस्वी भजनों को श्रोता अत्यन्त रुचि पूर्वक सुनते थे। उन्होंने जीवन के अन्तिम समय तक अपने भावपूर्ण भजनोपदेश से आर्य समाज की अनुकरणीय

सेवा की। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उनके निधन पर गहरा दुख प्रकट करते हुए पूरे आर्य जगत की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की सदगति के लिए तथा पारिवारिकजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने के लिए शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 • दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।